ओमशान्ति मीडिया

मूल्यनिष्ठ समाज की रचना के लिए समर्पित

वर्ष-18 | अंक- 19 | जनवरी-I | (पाक्षिक) | माउण्ट आबू | Rs. 8.00

नर से नरोत्तम प्रजापिता ब्रह्मा

18 जनवरी 'विश्व शांति दिवस'

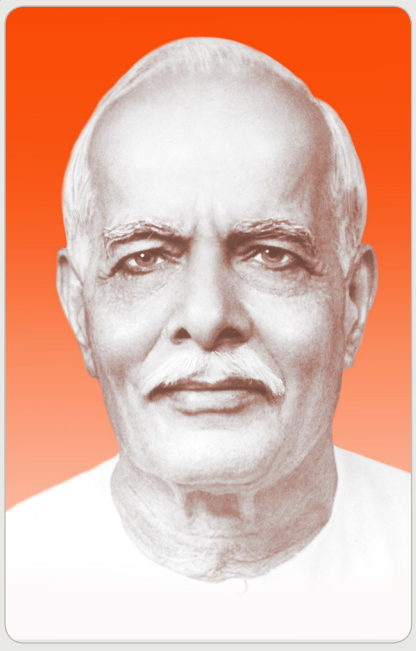

रोज़ गिरकर भी मुकम्मल खड़े हैं, ऐ ज़िन्दगी देख, मेरे हौसले तुझसे भी बड़े हैं..।

बहुत मुश्किल है खड़े होकर खड़े रहना, उससे भी ज़्यादा मुश्किल है बड़े होकर बड़े रहना..।

इन दोनों कहावतों को अगर किसी ने अपने वजूद से सहज बनाया है, तो वो हैं हमारे ब्रह्मा बाबा। उन्होंने परमात्मा की हर बात को सम्पूर्ण रीति से सबके साथ मिलकर अपने जीवन तथा दूसरों के जीवन में आमूलचूल परिवर्तन लाने का जो एक अकल्पनीय कार्य किया, उसे आज आध्यात्मिक संसार सहजता से स्वीकार करता है। आज इस संस्था का प्रारूप ब्रह्मा बाबा के अस्तित्व पर ही बना हुआ है। वर्तमान परिवेश में अगर कोई हमारे लिए एक ज्वलंत स्वरूप में स्थापित है, तो वो हैं हमारे पिताश्री प्रजापिता ब्रह्मा।

एक सांसारिक मनुष्य, जो हीरे-जवाहरातों का व्यापारी था, ने अपनी सारी चल-अचल सम्पत्ति एक ट्रस्ट बनाकर कुछ माताओं और बहनों को उसका ट्रस्टी बनाकर मानव सेवा हेतु सौंप दिया, ऐसी दिव्य विभूति का नाम दादा लेखराज था। सूट-बूट पहनकर दुनिया में अपनी एक अलग छाप छोड़ने वाला इंसान एक साधारण धोती-कुर्ता पहनने वाला बन गया। जिनका मन कभी हीरों से खेलने का करता था, धन कमाने में रम था, वही हीरे-मोती उन्हें कौड़ी जैसे लगने लगे। कल जो इधर-उधर मंदिरों में, तीर्थों पर जाकर दर्शन करने के लिए लालायित थे, आज वे स्वयं परमात्मा के रथ बने, यह एक अद्भुत परिवर्तन था। उनके मुखारविंद का परमात्मा स्वयं प्रयोग कर उससे आध्यात्मिक ज्ञान प्रस्फुटित करते। यह सबकुछ आपको अकल्पनीय सा लगेगा, लेकिन यह सब हुआ है। आश्चर्य तो यह माना जाता है कि जिनके अंदर ये सारे परिवर्तन हुए, वह स्वयं इन समस्त बातों को लेकर अनभिज्ञ थे। उनके अंदर यह आमूलचूल परिवर्तन देखकर एक नहीं, दो नहीं, तीन नहीं, करीब चार से पाँच सौ माताएं, बहनें और भाई उस दिव्य विभूति के रंग में रंगने को आतुर हो गये। इतना सुंदर संगठन, जिसमें प्रभु लीला का रस सबके अंदर समा गया, इस संगठन को नाम मिला 'ओम मंडली'। छोटी सी घटना हम आपको याद दिलाना चाहेंगे, कि 1936-37 में एक प्रख्यात व्यापारी दादा लेखराज कृपलानी के 60 वर्षीय तन में परमात्मा ने परकाया प्रवेश करके दिव्य अवतरण लिया, और यह अवतरण इतना अनोखा था कि किसी को पता भी नहीं चला और चमत्कार होने शुरू हुए। तभी से ओम मंडली संगठन के सभी भाई बहनों, माताओं ने स्वयं के संस्कारों का दिव्यीकरण करने का लक्ष्य लिया। ये दादा लेखराज

- शेष पेज 7 पर...

मन स्वच्छ करो, तो दुनिया में नम्बर वन आओगे : शिवानी

इंदौर-म.प्र.। इंदौर स्वच्छता में देश के 200 शहरों में नम्बर वन रहा है। 2018 में 4000 से भी अधिक शहरों से प्रतियोगिता है, लेकिन विश्व में नम्बर वन आना है तो मन को स्वच्छ करना होगा। मन स्वच्छ हो गया तो बाहर और अन्दर की पूरी गंदगी साफ हो जाएगी।

यह विचार ब्रह्माकुमारीज़ की जीवन प्रबंधन विशेषज्ञा ब्र.कु.शिवानी ने रेस कोर्स रोड स्थित बास्केटबॉल कॉम्पलेक्स में 'जीवन रूपी खेल के सुनहरे नियम' विषय पर व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि यहाँ के लोगों ने वो कर दिखाया है जो अब तक किसी ने नहीं किया। संगठन में इतनी शक्ति होती है कि एक बार संकल्प ले लिया जाए तो कुछ भी किया जा सकता है। शहर स्वच्छ होने के बाद अब सोच, बोल और कर्म को साफ करने की ज़रूरत है, तभी शांत और सुखी शहर का निर्माण होगा।

उन्होंने कहा कि हमारे विचार शरीर के प्रत्येक सेल तक जाते हैं। एक बार गलत रिकॉर्डिंग हो गई, तो समझो वो म्यूज़िक की तरह बार-बार बजते हैं। यही बीमारी का कारण है। डॉक्टर शरीर के अंग की सर्जरी कर बीमारी खत्म कर देता है, लेकिन दिमाग में बात रेकॉर्ड रहने से बीमारी वापस आ जाती है। इसलिए ज़रूरी है कि गलत विचारों से भरी इस रिकॉर्डिंग को मेडिटेशन करके खत्म कर दिया जाए।

सकारात्मक आभामंडल से बनते हैं रिश्ते : ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि रिश्ते बनाने के लिए बोल और व्यवहार ज़रूरी नहीं है, ज़रूरी है विचारों का सकारात्मक होना। सकारात्मक ऊर्जा रिश्तों को खींचती है। उन्हें संजोकर रखती है। लेकिन जीवन में नेगेटिव विचार होंगे तो इंसान का आभामंडल कम. जोर होता है और रिश्ते बिगड़ जाते हैं। लोगों के मन की नेगेटिव स्थिति ही दुनिया के आभामंडल को खराब करने के लिए ज़िम्मेदार है।

कलियुगी बातों को सतयुगी तरीके से करें तो दुनिया बदल जाएगी : कलियुग में काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार प्रत्येक व्यक्ति पर हावी है। यदि सब में सतयुगी विचारधारा आ जाए और वातावरण पॉज़ीटिव हो जाए तो कलियुग में भी सतयुग लाया जा सकता है। इसके लिए ज़रूरी है कलियुग को साफ करना, मन को सतयुगी बनाना। इसके लिए प्रतिदिन सुबह से लेकर शाम तक प्रत्येक कर्म को करने से पहले एक बार सोचना ज़रूरी है कि यह अच्छा है या बुरा। ब्र.कु. शिवानी बहन ने टी.वी. पर आने वाले पॉज़ीटिव व नेगेटिव कार्यक्रमों की तुलना करते हुए कहा कि सुबह के आधे घंटे का आध्यात्मिक कार्यक्रम लोगों के जीवन में खुशहाली ला सकता है। लोग दिनभर टी.वी. पर फिल्म व सीरियल देखते हैं। तो उनके जीवन में कितनी नेगेटिविटी आती होगी। इसी प्रकार दिनभर सोशल मीडिया व अन्य माध्यमों से आने वाली नेगेटिव इनफॉर्मेशन के कारण लोगों की सोच कलियुगी हो गई है। यदि स्व-परिवर्तन हो जाए तो विश्व परिवर्तन निश्चित है।

सब सात्विक होना ज़रूरी: ब्र.कु. शिवानी ने कहा कि जो खाते हैं, पढ़ते हैं और देखते हैं वह सात्विक होना ज़रूरी है। भोजन किस धन से खरीदा गया है यह ध्यान रखना ज़रूरी है। यदि वह भ्रष्टाचार और बेईमानी की कमाई से खरीदा गया है तो ऐसे भोजन से सोच खराब होती है। खाना पकाते समय भी मन में अच्छे विचार रखना चाहिए। इसी पर एक कहावत भी है कि जिस घर में प्यार से खाना पकता है, वहाँ रिश्ते हमेशा सलामत रहते हैं। पढ़ने और देखने में भी हमें ऐसी सामग्री का उपयोग करना चाहिए जो आध्यात्मिक और सात्विक हो। इस अवसर पर क्षेत्रीय निदेशिका ब्र.कु.कमला बहन, मुख्य क्षेत्रिय समन्वयक ब्र.कु.हेमलता, संभागायुक्त संजय दूबे सहित विश्व विद्यालय के सदस्य व बड़ी संख्या में शहरवासी उपस्थित रहे। संचालन छ.ग. से आईं ब्र.कु. मंजू ने किया।

दीप प्रज्वलित करते हुए संभागायुक्त संजय दूबे, इंदौर विकास प्राधिकरण के अध्यक्ष शंकर लालवाणी, ब्र.कु. कमला दीदी, ब्र.कु. शिवानी, ब्र.कु. हेमलता सहित शहर के गणमान्य लोग।